ग़ज़ल 09

-रविशंकर श्रीवास्तव

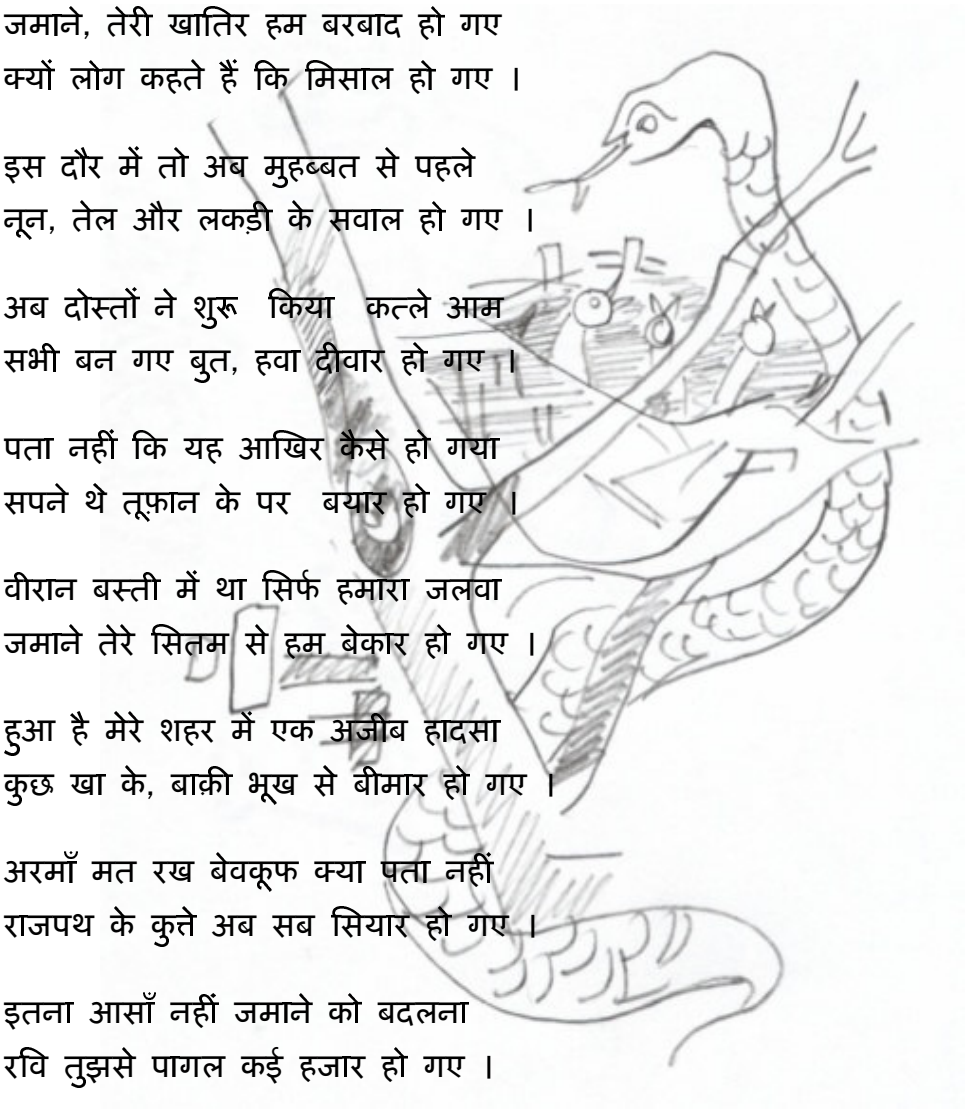

जमाने, तेरी खातिर हम बरबाद हो गए
क्यों लोग कहते हैं कि मिसाल हो गए ।

इस दौर में तो अब मुहब्बत से पहले
नून, तेल और लकड़ी के सवाल हो गए ।

अब दोस्तों ने शुरू किया कत्ले आम
सभी बन गए बुत, हवा दीवार हो गए ।

पता नहीं कि यह आखिर कैसे हो गया
सपने थे तूफ़ान के पर बयार हो गए ।

वीरान बस्ती में था सिर्फ हमारा जलवा
जमाने तेरे सितम से हम बेकार हो गए ।

हुआ है मेरे शहर में एक अजीब हादसा
कुछ खा के, बाक़ी भूख से बीमार हो गए ।

अरमाँ मत रख बेवकूफ क्या पता नहीं
राजपथ के कुत्ते अब सब सियार हो गए ।

इतना आसाँ नहीं जमाने को बदलना
रवि तुझसे पागल कई हजार हो गए ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001